संस्कृति की संरक्षक-महिला

संस्कृति का संबंध संस्कारों से है, व्यक्ति का रहन-सहन, खान – पान, वेशभूषा, आचरण, चरित्र संस्कृति के अंर्तगत आते हैं प्राचीन भारतीय संस्कृति देव संस्कृति रही है, जिसके लिये गायन है '' यत्र नार्यस्तु पुज्यन्ते रमन्ते तत्र देवता, आदि भारतीय संस्कृति में नारी को पूजनीय स्थान प्राप्त था, अत: भारत सम्पन्न, समृद्ध था.कालचक्र घुमने के साथ ही स्थितियों मे परिवर्तन हुआ, अनेक विदेशी आक्रान्ताओं ने भारत को अपने अधीन किया और भारतीय संस्कृति में अन्य अनेक संस्कृतियों के प्रभाव का समावेश होने लगा. इससे नारी की गरिमा कम हुई उसे दूसरे दर्जे का नागरिक समझा जाने लगा। अनेक कुरीतियो, रूढ़िवादी सोच से महिलाओं का जीवन दयनीय स्थिति में पहुँच गया. वर्तमान समय 21वीं सदी में भी अत्याचार, भेदभाव, शोषण, दुष्कर्म जारी है। चाहे उसका स्वरूप आधुनिक हो गया है.

संस्कृति एवं संस्कारों की रक्षा का बीड़ा स्वयं महिलाओं को उठाना होगा.महिला परिवार की धुरी है, बच्चों के सामीप्य में उसका काफी समय व्यतीत होता है.यदि वह बाल्यकाल से ही बच्चों का श्रेष्ठ संस्कारों से सिंचन करें तो भावी नागरिक चरित्रवान, संस्कारवान, सदाचारी होंगें, 5 से 12 वर्ष की उम्र में बच्चे कच्ची मिट्टी के समान होते हैं, इस उम्र में उसके संस्कारों को मनचाहा आकार दिया जा सकता है जिसका प्रभाव जीवनपर्यन्त रहता है. परन्तु इसके लिये उसका खुद का जीवन उच्च संस्कारों से युक्त हो , तभी उन संस्कारों का स्थानांतरण वह बच्चों में कर सकती है. भारतीय संस्कृति के आदर्शों के प्रति उसकी स्वयं की गहरी आस्था हो , पर उसमें रूढ़ियों एवं कुरीतियों का स्थान न हो. यदि वह स्वयं ही पाश्चात्य संस्कृति के प्रभाव में है, आधुनिकता के प्रदर्शन के लिये खान - पान, रहन- सहन पश्चिमी संस्कृति का मिश्रण लिये हुये हैं, तो बच्चो पर उसका दोहरा प्रभाव होता है क्योंकि काफी समय वह घर से बाहर मित्रों के साथ भी व्यतीत करता है, संग का वह प्रभाव कहीं अधिक होता है. साथ-2 वर्तमान में आधुनिक सामाजिक माध्यमों का भी अति आकर्षण है, जो अपनी सांस्कृतिक जड़ों से काटने के लिये काफी है. ऐसे में माता की जिम्मेवारी अधिक हो जाती है. वह स्वयं भी आधुनिकता को सही अर्थो में अपनाये, समय के साथ चले, लेकिन जीवन मूल्यों को साथ लेकर। आधुनिकता का अर्थ फैशनपरस्ती, अश्लीलता, दिखावा, क्लबों में डांस करना , व्यसन लेना नहीं है. आधुनिक होना अर्थात अपने कर्तव्यों, अधिकारों के प्रति जागरुक होना, स्वयं के जीवन के निर्णय ले पाना, आत्मनिर्भरता एवं आत्मसम्मान से जीवनयापन करना. आधुनिक कहलाने वाली महिलायें देखा जाता है पारीवारिक जिम्मेवारियों की उपेक्षा करने लगती हैं, बच्चों को समय नहीं देती, वह मात- पिता के स्नेह से वंचित अन्य कहीं प्रेम तलाशनें के कारण गलत राहों में भटक जाते हैं, आधुनिकता में स्वतंत्रता एवं स्वछंदता के बीच का फर्क समाप्त हो रहा है,

अत: महिलाओं के भी नैतिक एवं आध्यात्मिक सशक्तिकरण की आवश्यकता है जिससे वह स्वयं चरित्रवान, संस्कारवान, गुणवान हो. भारतीय संस्कारों एवं संस्कृति की संरक्षक हों.

इस ईश्वरीय विश्वविद्यालय के माध्यम से स्वयं परमात्मा शिव धरा पर अवतरित होकर आदि सनातन दैवी संस्कृति की स्थापना नारी को निमित बनाकर कर रहे है. परमात्मा की श्रीमत अनुसार कर्म करने से संस्कारां में दिव्यता आने लगती है. जिसके लिये गायन है नर ऐसी करनी करे नारायण होए, नारी ऐसी करनी करे जो लक्ष्मी होए। यदि महिलायें जाग्रत हों जायें तो भारतीय संस्कृति की सहज ही रक्षा हो जायेगी।